P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12* August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विकलांग एंव सामान्य छात्रों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विकलांग एवं सामान्य छात्रों की आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना। जिसकी परिकल्पना सामान्य व विकलांग बालकों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। न्यायदर्श में 100 विद्यार्थियों को चुना गया तथा आकांक्षा स्तर को मापने का प्रमापीकृत उपरण ई.ए.एस. (EAS) द्वारा आकांक्षा स्तर को मापा गया। निष्कर्षतः विकलांग एवं सामान्य छात्रों की आकांक्षा स्तर में अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द : आकांक्षा, अभिप्रेरण, मनोवैज्ञानिक, निष्पादन, प्रतिष्ठा।

प्रीति राठौड
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
ज्योति विद्यापीठ वूमन
यूनिवर्सिटी, जयपुर
राजस्थान

मंजू शर्मा
निर्देशिका,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
ज्योति विद्यापीठ वूमेन
यूनिवर्सिटी, जयपुर
राजस्थान

प्रस्तावना

आकांक्षा एक मनोवैज्ञानिक शब्द है जो व्यक्ति के किसी न किसी संदर्भ में होती है। आकांक्षा व्यक्ति के उन्नति करने की या अपने स्तर को ऊँचा उठाने की इच्छा होती है। आकांक्षा स्तर से तात्पर्य ऐसे निष्पादन स्तर से होता है जिसकी उम्मीद व्यक्ति से तात्पर्य ऐसे निष्पादन स्तर से होता है। जिसकी उम्मीद व्यक्ति करता है। क्योंकि यह व्यक्ति का एक व्यक्तिगत अभिप्रेरणा होता है। अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है जब कोई व्यक्ति एक कार्य कर रहा होता है तो वह अपने लिए एक नया स्तर बना लेता है। जिसे वह पाना चाहता है। आकांक्षा स्तर किसी कार्य के संम्पादन की श्रेष्ठता अथवा वह अपने जीवन में क्या प्राप्त करना चाहता है। इसी व्यक्तिगत आधार पर भिन्नता प्रदर्शित होती है। प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा स्तर में अन्तर पाया जाता है। एक कार्य में अपने पिछले निष्पादन स्तर को जानते हुए उस कार्य में भावी निष्पादन स्तर पर पहुंचने की आशा ही आकांक्षा स्तर कहलाती है। जिस पर व्यक्तिगत आधार पर आकांक्षा भिन्न होती है। उसी प्रकार सामान्य व विकलांगों में भी आकांक्षा का स्तर अलग अलग होता है।

साहित्यावलोकन

मदारसोवा गिकोवा (2015) ने किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर से सम्बन्धित घटकों एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में अन्तर का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक आकांक्षा स्तर, स्वास्थ्य, सामाजिक आर्थिक स्थिति की पृष्ठभूमि विद्यालय सम्बन्धी घटक एवं किशोरों के सामाजिक सहयोग के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना था। शोधकर्ता ने शोध अध्ययन के प्रदत्तों के संकलन हेतु सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के लिए माता–पिता की शिक्षा एवं रोजगार की स्थिति तथा बच्चों को भावी अध्ययन हेतु सन्देह एवं आर्थिक भार के वहन की क्षमता, विद्यालय से सम्बन्धित घटकों के लिए विद्यालय वातावरण विद्यालय की परिस्थितियां एवं विद्यालय के प्रति अभिवृत्ति, विद्यालय सहयोग के प्रत्यक्षीकरण हेतु विद्यालय की प्रबन्धकीय व्यवस्था एवं छात्रों के सम्बन्ध में उनकी समझ और स्वास्थ्य सम्बन्धित घटकों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न प्रकार थे–विद्यालय वातावरण की प्रकृति, परिवार एवं व्यक्तिगत रूप से किशोर सभी शैक्षिक आकांक्षा के स्तर से सम्बन्धित होते हैं। लेकिन विभिन्न शैक्षिक मार्गों में वे अलग–अलग तरीके अपनाते हैं। शिक्षा के द्वारा सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं स्वास्थ्य में अन्तर के लिए पिता की भूमिका एवं उसका हस्तक्षेप महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बी.हसन (2016) ने, ''लिंग, व्यावसायिक आकांक्षा और आत्म–सम्प्रत्यय के पद परिप्रेक्ष्य में भारतीय किशोर विद्यार्थियों के कैरियर परिपक्वता का अध्ययन।'' विषय पर पी.एच.डी स्तरीय शोध कार्य आर.एस. विश्वविद्यालय कानपुर से किया। निष्कर्ष में पाया कि भारतीय परिवेश में छात्रों को भविष्य के लिए उचित कैरियर चुनने दिया जाता है। जबकि छात्राओं के विवाह को प्राथमिकता दी जाती है। छात्राओं की अपेक्षा छात्र अधिक केरियर परिपक्वता प्रदर्शित करते हैं। भारतीय संस्कृति में आत्म सम्प्रत्यय व्यावसायिक आकांक्षा और

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-12* August- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

लिंग महत्वपूर्ण कारक है जो कक्षा 10 के विद्यार्थियों के केरियर परिपक्वता को प्रभावित करते हैं।

कथन उद्देश्य तथा परिकल्पना

समस्या कथन

सामान्य व विकलांग बालकों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अधययन।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सामान्य बालकों का आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. विकलांग छात्रों का आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पना

सामान्य व विकलांग बालकों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श तथा विश्लेषण

सामान्य व विकलांग 100 छात्रों को शामिल किया गया जिसमें 50 सामान्य व 50 विकलांग छात्रों को शामिल किया गया है।

उपकरण

डॉ. वी.पी. शर्मा व डॉ. अनुराधा गुप्ता (EAS) के द्वारा छात्रों का शैक्षिक आकांक्षा का मापन किया। इस मापनी का प्रशासन सामूहिक रूप से किशोर विद्यार्थियों पर 25 मिनट समय सीमा रखी गई है। इस मापनी में 8 प्रश्न हैं। प्रश्नों के सामने 10 डिग्री या अंकित की गई है। छात्रों को इन डिग्रियों का को ध्यानपूर्वक पढकर उचित स्थान पर किसी भी एक डिग्री के सामने सही का निशान लगाना है। जिसे वह अपने शैक्षिक जीवन में प्राप्त कर लेने अथवा प्राप्त कर लेने की इच्छा रखते हैं। प्रत्येक सूची में 10 आइटम रखी गयी है। हर आइटम का अलग प्रतिष्ठ मूल्य है जिसे क्रम से प्रस्तुत किया गया है और प्रश्नों का अंकन निम्न सारणी के अनुसार किया जाएगा। अधिकतम अंक 80 तथा निम्नतम 8 हैं।

तालिका– 1

Altration	1	2	3	4	5	6	7	8
1	10	2	8	7	5	4	10	5
2	8	7	2	1	6	7	8	6
3	1	8	6	8	2	5	2	1
4	3	6	1	9	4	6	3	2
5	9	5	10	5	7	8	4	3
6	6	10	9	3	10	2	1	4
7	7	1	3	10	8	10	5	7
8	5	4	7	6	9	1	7	8
9	4	9	5	2	3	3	9	9
10	2	3	4	4	1	9	6	10

तालिका –2

Piles	A	B	C	D	E	F	G	H	I	J
Prestige Value	(A) (91-100)	(B) (81-90)	(C) (71-80)	(D) (61-70)	(E) (51-60)	(F) (41-50)	(G) (31-40)	(H) (21-30)	(I) (61-20)	(J) (0-10)

सारणी 2 यह दर्शाती है कि 80 से ऊपर अंक होने पर उसे 'A' प्रतिष्ठा मूल्य में रखा गया है। तथा 8 से कम होने पर 'J' प्रतिष्ठा मूल्य में रखा गया है। तथा 100 बालकों पर इस परीक्षण को करने पर सबसे अधिक आकांक्षा 55 बालकों की तथा 45 निम्न आकांक्षा वाले बालक बालकों को पाया गया। तथा 10 बालक किसी भी श्रेणी में नहीं पाये गये।

तालिका –3

सामान्य व विकलांग बालकों के आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

Group	N	Mean	SD	DF	t- Value
सामान्य बालक	55	27.90	8.39	93	9.12
विकलांग बालक	40	13.58	6.87		

0.01 के स्तर पर महत्व

सारणी 3 के अनुसार सामान्य व विकलांग बालकों के आकांक्षा स्तर निर्धारण से सम्बन्धित मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 27.90, 13.58 व 8.39 व 6.87 है। जो परीक्षक के फलांकन विद्यानुसार कम आकांक्षा का द्योतक है। इसी प्रकार दोनों बालकों के प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण करने पर क्रान्तिक अनुपात 9.12 पाया गया है। जो 0.05 पर महत्वपूर्ण है। सार्थक अन्तर है। अर्थात् सामान्य बालक का आकांक्षा स्तर उच्च होता है। विकलांग बालकों की तुलना में।

निष्कर्ष

मनुष्य का महत्वाकांक्षी होना एक स्वाभाविक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कुछ ना कुछ विशेष प्राप्त करना चाहता है। सभी व्यक्तियों की इच्छाएं अलग अलग होती हैं। परन्तु इनमें से बहुत कम लोग इच्छाओं को मूर्त

रूप दे पाते हैं। क्योंकि सामान्य व विकलांग बालकों की आकांक्षाओं में अन्तर होता है। और उसका कारण है सामाजिक वातावरण। आकडों के विश्लेषण से पाया कि सामान्य बालकों की आकांक्षा अधिक होती है। जबकि विकलांग बालकों की सामान्य से कम क्योंकि विकलांग बालक सामाजिक वातावरण में कुछ कार्यों में खुद को कमजोर समझते हैं और वे पीछे हट जाते हैं। जबकि आकांक्षा एक स्वाभाविक गुण है। ये सभी में विद्यमान होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अहमद, सरफराज और रख्मी, सिन्हा निगम, इण्डिया जरर्नल ऑफ साईकोमेट्री एण्ड एजूकेशन 2008, 39 (2) 164–168*
2. *त्रिपाठी एस.पी. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।*
3. *Grewal, J.S. (2002): Manual for Occupational Aspiration Scale Agra. National Psychological Corporation.*
4. *Sharma V.P. (1971): educational Asspiration Scale (EAS) form (v) Agra, National Psychological Corporation.*
5. *Canway, K.M. (2010), educational aspiratin in an Urban Community Collage: Difference between Immigrant and Native student groups, Community college Riview, 37 (3) 209-242.*
6. *Garg, R, Kauppi, C, Leuko, J. and Urainik D, (2002), A Strucural Model of educational aspirations Journals of Career Development 29 (2), 877-108.*
7. *जरशिल्डएटी : किशोर मनोविज्ञान विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी*
8. *लवानिया एम.एम. –: समाज शास्त्रीय अनुसंधान तर्क व विधिया, नई दिल्ली रिसर्च पब्लिकेशन।*